Sanskritik aur Samajik Anusandhan
www.shodhjournal.com
ISSN: 2582-5852
Received: 14-11-2021, Accepted: 29-11-2021, Published: 15-12-2021
Volume 2, Issue 2, 2021, Page No. 47-49

दीन दयाल उपाध्याय एकात्म मानववाद, अन्तोदय का विचार और वर्तमान भारतः एक विवेचनात्मक अध्ययन

डॉ. मनोज कुमार, डॉ. अनुराग पाण्डेय
दयाल सिंह कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत

सारांश
प्रस्तुत लेख पं दीन दयाल उपाध्याय के विचारों, सिद्धांतों और राज्य एवं निजी जीवन के आधारभूत मूल्यों का अध्ययन प्रस्तुत करता है। वर्तमान में दीन दयाल उपाध्याय पर हुए शोध एकतरफा दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हैं, जो पं उपाध्याय के जीवन, विचारों एवं सिद्धांतों का एक सारगर्भित अध्ययन प्रस्तुत नहीं कर पाते हैं। ये लेख ना केवल पं उपाध्याय के विभिन्न विचारों और सिद्धांतों का एक विश्लेषण प्रस्तुत करता है, बल्कि उनपर हुए एकतरफा अध्ययन की भी आलोचना करता है। अंत में लेख पं उपाध्याय के विचारों एवं सिद्धांतों को वर्तमान परिप्रेक्ष्य से जोड़ता है और ये जानने का प्रयास करता है के किन आधारों पर पं उपाध्याय के विचार आज के भारत में ज्यादा प्रासंगिक हैं और इन्हें दैनिक, सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन में अपनाना क्यों अनिवार्य है।

मूल शब्दः एकात्म मानववाद, राष्ट्र एवं राष्ट्रवाद, चिति, सेवाधर्म, भारतीयता, आत्मनिर्भर भारत।

प्रस्तावना

भारत में स्वतंत्रता पूर्व और स्वतंत्रता के पश्चात सामाजिक एवं राजनीतिक क्षेत्र में आमूल–चूल परिवर्तन लाने और देश को जागरूक करने के लिए कृतसंकल्प विचारकों की एक बड़ी संख्या है। उन्हीं में से एक विचारक थे पंडित दीनदयाल उपाध्याय, जिन्हें भारतियों के मध्य नैतिक प्रेरणा प्रेषित करने का कार्य किया। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् और कई वर्षों तक कांग्रेस शासन होने के कारण एक ही तरह के विचारों को बढ़ावा मिला, और नतीजन पंडित दीनदयाल उपाध्याय पर शोध ना बराबर हुए और जो शोध हुए भी वो एकतरफा और पूर्वाग्रह से ग्रसित हैं इन शोधों में इतिहास की तथ्यात्मक व्याख्या और कांग्रेस द्वारा शिक्षा और शैक्षिक संस्थाओं में एक विशेष विचारधारा को बढ़ावा देने के कारण दीनदयाल जी के विचार भारतीय जनमानस में जगह नहीं बना सके। पं दीनदयाल जी ने राष्ट्र, राष्ट्रवाद, धर्मनिरपेक्षता और असम्प्रदायिकता, सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक विकास पर बहुत व्याख्यान दिए और लेख लिखे किन्तु इनके विचारों को नजरअंदाज ही किया गया। ये कहना अतिश्योक्ति ना होगी के पंडित दीनदयाल उपाध्याय के लिए राजनीति साध्य नहीं वरन साधन थी और इसी वजह से उनका दर्शन सामाजिक–आर्थिक पिछड़ेपन को खत्म करके एक संगठित राष्ट्र का निर्माण करने पर केंद्रित था जहाँ सभी व्यक्ति एक भारतीय के रूप में विकसित हों। प्रस्तुत लेख पंडित दीनदयाल उपाध्याय के इन्हीं विचारों में से प्रमुख ''एकात्म मानववाद" और अंत्योदय का सिद्धांत'' की चर्चा करता है। और अंत में इस लेख में ये जानने का प्रयास किया गया है के उपरोक्त दोनों सिद्धांत आज के आत्मनिर्भर भारत से किस तरह से जुड़े हुए है। पंडित दीनदयाल उपाध्याय का प्रबल विश्वास था के जब तक अंतिम पंक्ति में खड़े व्यक्ति का सर्वांगीण विकास नहीं हो जाता, तब तक राष्ट्र निर्माण का स्वप्न पूर्ण नहीं हो सकता है। एकात्म मानववाद के सिद्धांत को सर्वप्रथम सन 1964 में जनसंघ के ग्वालियर अधिवेशन में रखा गया और सन 1965 में अगले ही वर्ष जनसंघ के विजयवाड़ा अधिवेशन में इसे विधिवत अंगीकार कर लिया गया। पंडित दीनदयाल ने 22 से 25 अप्रैल 1965 तक चले चार दिवसीय व्याख्यान में एकात्म मानववाद दर्शन पर विस्तृत परिचर्चा करि।

एकात्म मानववाद

राष्ट्र क्या है?

पंडित दीनदयाल कहते हैं के जब कोई मानव समूह निर्धारित ''लक्ष्यों एवं आदर्शों'' के साथ जीवन यापन करता है और भूमि के एक हिस्से (जहाँ वो निवास करता है) के प्रति प्रेम और मातृभूमि का भाव संजोता है तो ये तथ्य एक राष्ट्र का निर्माण करते हैं। यदि लक्ष्यों अथवा आदर्शों में किसी एक भी तत्व का अभाव हो तो राष्ट्र निर्माण असंभव हो जाता है क्योंकि इनमें से किसी एक के भी अभाव में मातृभूमि का भाव जन्म नहीं ले पाता।

मनुष्य के शरीर में आत्मा एवं स्व होता है, यही समस्त मनुष्यों का सार हैय अगर यह आत्मा अथवा स्व शरीर का साथ छोड़ दे तो व्यक्ति को मृत मान जाता है। इसी तरह किसी राष्ट्र के आदर्श, मौलिक सिद्धांत और मातृभूमि का भाव उस राष्ट्र की आत्मा होते हैं। किसी भी राष्ट्र की एक आत्मा होती है और पंडित दीनदयाल इसे चिति का नाम देते हैं।

चिति एक संस्कृत शब्द है जिसका अर्थ सार्वभौमिक चेतना से है और यही पंडित दीनदयाल के एकात्म मानव दर्शन का मूल है।[1]

चिति के बारे में वो आगे कहते हैं के किसी भी कर्म के गुण एवं दोष निर्धारित करने का माध्यम चिति ही है। अर्थात वो सब कुछ जो हमारे स्वभाव या चिति के अनुरूप होता है, सिर्फ वही स्वीकार्य होता है और ये स्वभाव राष्ट्र की संस्कृति का हिस्सा बन जाता है। अतः राष्ट्र निर्माण में समस्त देशवासियों को इस चिति को आगे बढ़ाना चाहिए।[2]

पंडित दीनदयाल आगे कहते हैं के कुछ भी जो चिति विरुद्ध होता है, उसे विकृत एवं अवांछनीय मानकर त्याग दिया जाता है और चिति विरुद्ध क्रियाकलापों से बचना चाहिए। चिति की कसौटी पर ही हर एक क्रिया एवं दृष्टिकोण को परखा जाता है। चिति किसी भी राष्ट्र की आत्मा होती है और चिति की नींव पर ही राष्ट्र निर्माण संभव होता है, एक सशक्त और साहसी राष्ट्र का निर्माण होता है। चिति ही किसी भी राष्ट्र के प्रत्येक महापुरुष द्वारा किए गए विभिन्न कार्यों में परिलक्षित होती है।[3]

राज्य

राज्य एक संस्था है और इसका अन्य कई संस्थाओं में एक महत्वपूर्ण स्थान हो गया है, किन्तु दीनदयाल राज्य को सर्वोपरि मानने की वकालत नहीं करते हैं, उनका तर्क है के राज्य को सर्वोपरि मानने के कारण विश्व में नाना प्रकार की समस्याएं उतपन्न हो रही हैं। इन सभी समस्यायों का एकमात्र कारण व्यक्तियों द्वारा ये स्वीकार किया जाना है के राज्य समाज का पर्याय है और राज्य को ही समाज का एकमात्र प्रतिनिधि मानते हैं।[4]

इसी प्रवत्ति के कारण अन्य सभी संस्थाओं के प्रभाव में गिरावट आई है। इसी वजह से राज्य का प्रभाव बहुत बढ़ गया है और इस कदर हावी हो चुका है के राज्य में निहित सभी शक्तियां केंद्रीकृत हो रही हैं। दीनदयाल आगे कहते हैं के भारत में राज्य को राष्ट्र का एकमात्र प्रतिनिधि कभी नहीं माना गया, उस समय भी नहीं जब भारतीय राज्य विदेशी आक्रांताओं के हाथ में गया, उस दौर में भी आम राष्ट्रीय जीवन निर्बाध रूप से आगे बढ़ता रहा अतः राज्य को सर्वोच्च संस्था नहीं माना जाना चाहिए। सामाजिक संरचनाएं जैसे धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष इत्यादि मौलिक तौर पर अधिक महत्वपूर्ण होनी चाहिए।[5]

दीनदयाल जी ऐसा इसलिए कहते हैं क्योंकि अधिकांश व्यक्ति समाज को स्वयंभू मानते हैं, इसका अर्थ ये है के प्रत्येक भारतीय अपने समाज की विभिन्न संरचनाओं एवं संस्थाओं का अंग बने रहते हैं। जैसे एक व्यक्ति किसी कुटुंब का अंग होने के साथ साथ धर्म, जाति, व्यापार इत्यादि का भी अंग होता है, समाज से आगे अगर देखें तो वही व्यक्ति सम्पूर्ण मानवता का भी अंग है और इस चराचर जगत का भी अंग है। कुल मिलाकर दीनदयाल जी ये कहते हैं के व्यक्ति एकांगी नहीं हो सकता है बल्कि बहु–अंगी है। और व्यक्ति बहु–अंगी होकर भी पारस्परिक सहयोग एवं समन्वय और एकात्मकता के साथ जीवन यापन कर सकता है। अतः जो व्यक्ति इन सभी गुणों को साथ लेकर चलता है वो सुखी रहता है और जो इनसे दूर हो जाता है वह समस्यायों को आमंत्रित करता है और दुखी रहता है।[6]

धर्म और राष्ट्र की अवधारणा

पंडित उपाध्याय ये मानते थे के राष्ट्र की रक्षा के लिए राज्य को अस्तित्व में लाया गया है और राष्ट्र के आदर्श चिति का निर्माण करते हैं, जो व्यक्ति की आत्मा के समान है। किसी राष्ट्र की चिति को व्यक्त करने और बनाए रखने में सहायक विधियों एवं विधानों को राष्ट्र के धर्म के रूप में जाना जाता है। अतः धर्म स्वतः ही सर्वोच्च हो जाता है। दीनदयाल जी के अनुसार धर्म ही वो तत्व है जिसमें एक राष्ट्र की आत्मा का वास होता है, यदि धर्म नष्ट हो जाए तो वो राष्ट्र भी नष्ट जाएगा और अगर कोई व्यक्ति धर्म का परित्याग करता है तो वह वास्तविक रूप में अपने देश के साथ विश्वासघात करता है।[7]

'रिलीजन बनाम 'धर्म'

अंग्रेजी के शब्द रिलीजन का हिंदी में शाब्दिक अर्थ किसी पंथ या संप्रदाय से जुड़ा होना है। और यहाँ धर्म का शाब्दिक अर्थ व्यक्ति के विभिन्न कर्तव्यों से जुड़ा है। अतः पंथ अथवा संप्रदाय से जुड़े होने का आशय धर्म से जुड़ा होना नहीं है। धर्म एक बेहद व्यापक अवधारणा है और व्यक्ति के जीवन के सभी पहलुओं से जुड़ा हुआ है। धर्म समाज का आधार है और कर्तव्य भावना के कारण समस्त विश्व को किसी ना किसी जरिए से जोड़े रखता है। अंततः जो धारण किया जाए, वही धर्म है।[8]

धर्मराज्य बनाम थियोक्रेटिक राज्य

पंडित दीनदयाल केअनुसार धर्मराज्य विभिन्न मतों को मानने की स्वतंत्रता सुनिश्चित करता है। वहीं दूसरी ओर एक थ्रियोक्रेटिक राज्य सिर्फ एक पंथ अथवा मत विशोष द्वारा शासित होता है, जहाँ उस मत या पंथ के धर्म के नियमों, प्रथाओं और कानूनों के हिसाब से ही राज्य के विभिन्न कार्य निर्धारित होते हैं। इसके इतर धर्मराज्य व्यक्ति की शांति, सुरक्षा, खुशी और प्रगति के लिए धर्म की महत्ता को स्वीकार करता है।. धर्मराज्य एक ऐसा वातावरण बनाता है जिसमें प्रत्येक व्यक्ति अपनी पसंद के मत अथवा पंथ का पालन कर पाता है। पंडित दीनदयाल कहते हैं के धर्मराज्य मेंअपने मत या पंथ का पालन करने, उसे मानने की स्वतंत्रता होती है और अन्य मतों या पंथों के लिए सम्मान और सहिष्णुता की भावना जागृत होती है।[9]

आर्थिक विचार एवं व्यक्ति के उद्देश्य

पंडित दीनदयाल ने अपने एकात्म मानववाद में आर्थिक सिद्धांतों का भी विस्तार से वर्णन किया है। इन आर्थिक विचारों का पालन करने से विकास एवं आर्थिक विकास के लक्ष्यों को हासिल किया जा सकता है। पूंजीवाद तथा साम्यवाद पर पंडित दीनदयाल उपाध्याय कहते हैं के ये दोनों ही विचार और इनकी आर्थिक नीतियां 'एकात्म मानव, उसके सम्पूर्ण व्यक्तित्व और आकांक्षाओं पर ध्यान देने में पूर्णतया नाकाम रही हैं। जहाँ पूंजीवादी विचारधारा व्यक्ति को स्वार्थी और सिर्फ भौतिक सुखों को प्राप्त करने के लिए धन अर्जित करने वाला बना देती है और उसे प्रतिस्पर्धा के गहरे भंवर में अकेला छोड़ देती है, वहीं दूसरी ओर साम्यवादी नीतियां अपनी केंद्रित नीतियों और व्यवस्थाओं में व्यक्ति को सिर्फ एक बेजान पहिया बना देती है जो राज्य के अति कठोर नियमों से हमेशा बंधा रहता है और जब तक राज्य से कोई अनुदेश प्राप्त ना हो व्यक्ति अपना कम से कम विकास करने और कुछ भी अच्छा करने में खुद को अक्षम पाता है। इन दोनों व्यस्थाओं में राज्य और सत्ता का अत्यंत आर्थिक और राजनीतिक केंद्रीकरण होता है और इसी वजह से दोनों विचार अति अमानवीयकरण को बढ़ावा देते हैं जिससे व्यक्ति अपना स्वं विकास करने में खुद को अक्षम पाता है।[10] पंडित उपाध्याय के अनुसार, मानव जाति में शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा के चार पदानुक्रमित गुण होते हैं जो धर्म (नैतिक कर्तव्यों), अर्थ (धन, सम्पत्ति), काम (इच्छा या संतुष्टि), और मोक्ष के चार सार्वभौमिक उद्देश्यों के पूरक हैं। इनमे से किसी एक को भी नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है, धर्म एक 'बुनियादी' विचार है, और मोक्ष मानव जाति और समाज का 'परम' उद्देश्य है। उन्होंने दावा किया कि पूंजीवादी और समाजवादी दोनों विचारधाराओं के साथ समस्या यह है कि वे केवल शरीर और मन की जरूरतों पर विचार करते हैं, और इसलिए वे इच्छा और धन के भौतिकवादी उद्देश्यों पर आधारित हैं जिससे मानव का सम्पूर्ण विकास असम्भव हो जाता है।[11]

अपने आर्थिक विचारों में पंडित दीनदयाल रोजगार को विशेष महत्त्व देते हुए कहते हैं कि सभी व्यक्तियों को पूर्ण रोजगार राज्य का प्रमुख उद्देश्य होना चाहिए। भारतीय राज्य 'हर कामगार को भोजन' के विचार पर चलता है, पंडित दीनदयाल कहते हैं के इस कार्य को करने के बजाए राज्य को प्रत्येक व्यक्ति को आत्मनिर्भर बनाने पर जोर देना चाहिए, राज्य को ऐसी व्यवस्था करनी चाहिए के हर व्यक्ति को भोजन के साथ साथ इतना कुशल भी बनाया जाए के उन्हें काम भी मिल सके। वर्तमान सरकार द्वारा शुरू की गई आत्मनिर्भर भारत योजना पंडित दीनदयाल के इसी सिद्धांत से प्रेरित है।[12]

उनके आर्थिक सिद्धांत के मुख्य बिंदु निम्नवत हैं, वो चाहते थे के इन विचारों को व्यक्ति के सर्वांगीण विकास के लिए भारतीय अर्थव्यवस्था में लागू किया जाना चाहिए[12]

1. प्रत्येक व्यक्ति के लिए कम से कम एक सामान्य जीवन स्तर उपलब्ध होना चाहिए और इसके साथ ही प्रत्येक व्यक्ति को अपने स्तर पर राष्ट्र की रक्षा के लिए तैयारी होनी चाहिए, क्योंकि भारत को आजाद हुए ज्यादा समय नहीं हुआ है अतः प्रत्येक व्यक्ति को उसकी क्षमता के अनुसार काम मिलना चाहिए और उस व्यक्ति को राष्ट्र सेवा के लिए भी तत्पर रहना चाहिए।

2. व्यक्ति के सामान्य जीवन स्तर में अधिक वृद्धि का प्रयास होना चाहिए ताकि प्रत्येक व्यक्ति और राष्ट्र दोनों अपनी–अपनी चिति के आधार पर विश्व की प्रगति में योगदान के सार्थक भागीदार बनें।
3. हर सक्षम नागरिक को सार्थक रोजगार प्रदान किया जाना चाहिए ताकि उपरोक्त लिखित दोनों उद्देश्यों को वास्तविक रूप में हासिल किया जा सके। साथ में ये भी सुनिश्चित हो के देश के प्राकृतिक संसाधनों का अकारण उपयोग ना हो, इसे संचित करके रखा जाए और इन संसाधनों की बर्बादी न हो।
4. उत्पादन के विभिन्न साधनों की प्रकृति और उपलब्धता को ध्यान में रखकर भारतीय स्थिति को ध्यान में रखते हुए भारतीय प्रौद्योगिकी के अनुकूल ही मशीनों का विकास किया जाना चाहिए।
5. देश की आर्थिक नीतियां और प्रणाली मनुष्य और व्यक्ति विशेष की मददगार होनी चाहिए, उसे निरस्त या खारिज करने वाली नहीं। ये समस्त नीतियां अर्थतंत्र के साथ साथ सांस्कृतिक और जीवन के अन्य मूल्यों की रक्षा करने वाली होनी चाहिए।
6. उद्योगों पर स्वामित्व पर पंडित दीनदयाल का विचार था के राज्य, निजी या किसी भी अन्य रूप में उद्योगों पर स्वामित्व हमेशा तथ्यात्मक और व्यावहारिक आधार पर ही तय किया जाना चाहिए।

कुल मिलाकर पंडित दीनदयाल आर्थिक नीतियों में स्वदेशी और विकेंद्रीकरण दोनों के प्रबल समर्थक थे और केन्द्रीयकरण को आर्थिक विकास की प्रमुख बाधाओं में से एक मानते थे। केन्द्रीयकरण का विरोध करते हुए वो कहते हैं के भारत ने आजादी के कुछ ही सालों में केन्द्रीयकरण और एकाधिकार की प्रवत्ति व्यक्तियों की रोजमर्रा की जिंदगी का अभिन्न हिस्सा बनते जा रहे हैं। योजना बनाने वाले इस विचार के गुलाम बन चुके हैं के सिर्फ बड़े स्तर पर केन्द्रीयकरण ही विभिन्न उद्योगों के लिए लाभप्रद है और इसलिए इसके दुष्प्रभावों से पूर्णतया अंजान हैं और इसकी कोई चितना किए बिना देश की आर्थिक नीतियों को उसी दिशा में आगे बढ़ा रहे हैं, इसी वजह से स्वदेशीकरण को भी नुकसान पहुंच रहा है।[13]

पंडित दीनदयाल कहते हैं के स्वदेशी की अवधारणा और विचारों को पुरातन और प्रतिक्रियावादी समझा जाता है और सभी इसका मजाक उड़ाते हैं, हम भारतीय विदेशी सामानों को गर्व से खरीदते हैं और इस्तेमाल करते हैं नतीजन हमारी सोच, अर्थ प्रबंधन, पूंजी एवं उत्पादन के तरिके, प्रौद्योगिकी इत्यादि से लेकर उपभोग करने तक हर एक चीज के लिए विदेशी आयात और सहायता पर अत्यधिक निर्भर हो चुके हैं। यह रास्ता जो भारतीय सरकार ने चुना है वो देश की अर्थव्यवस्था को पगति और विकास के रास्ते की ओर नहीं ले जा सकता, बल्कि मानसिक गुलामी की ओर ले जा रहा है। भारत अगर स्वदेशी को बढ़ावा नहीं देगा तो धीरे धीरे अर्थव्यवस्था पतन की ओर जाएगी, उनका मानना था के स्वदेशी के सकारात्मक पहलू देश की अर्थव्यवस्था के पुनर्निर्माण के लिए वर्तमान कांग्रेस सरकार को एक आधारशिला के रूप में लागू किया जाना चाहिए ताकि देश आत्मनिर्भर बन सके। इससे देश प्रगति करेगा और आत्मनिर्भर बनकर विदेशी निर्भरता को खत्म करेगा।[14]

अतः पंडित दीनदयाल का एकात्म मानववाद का सिद्धांत ही भारत को एक वैश्विक पहचान दिलाएगा जिसके मूल में भारतीय संस्कृति और संस्कार होंगे। जैसा ऊपर लिखा गया के पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने पूंजीवाद, साम्यवाद और समाजवाद के मुकाबले एकात्म मानव दर्शन को प्रमुख माना इसी एकात्म मानवाद के माध्यम से उन्होंने अंत्योदय के सिद्धांत को प्रतिपादित किया ताकि देश के सर्वांगीण विकास की दिशा सुनिश्चित करि जा सके।[15] उस दौर में अमीरी और गरीबी के बीच की खाई लगातार बढ़ती जा रही थी। एक ओर जहां देश की एक बड़ी आबादी गरीबी, बेकारी और भुखमरी से जूझ रही थी वहीं दूसरी ओर समाज में ऐसे कई व्यक्ति हैं जिनके पास असीम धन–संपदा है। इसी आर्थिक विषमता को देखते हुए उन्होंने इसे दूर करने के लिए 'अंत्योदय' का सिद्धांत दिया।[16] उन्होंने कहा के देश की अर्थनीति द्वारा प्रयास किया जाना चाहिए के देश की विकास योजनाएं इस तरह निर्धारित करि जाएं के अंतिम पंक्ति के अंतिम व्यक्ति का सबसे पहले विकास हो। उनका ये अटूट विश्वास था के भारतीय समाज के उपेक्षित व शोषित व्यक्ति एवं वर्गों को समाज की मुख्यधारा से जोड़ना चाहिए और ये आर्थिक समानता समाप्त करने का कार्य सिर्फ अन्त्योदय के सिद्धांत से ही सम्भव है।[17]

उस दौर की आर्थिक व्यवस्था पर अपने विचार रखते हुए पंडित दीनदयाल कहते हैं के संपत्ति की लालसा देश–धर्म–समाज और संस्कृति से व्यक्ति को उदासीन बना देता है अतः व्यक्ति विवेकहीन और असामाजिक होता है। इससे वो व्यक्ति तो कष्ट उठाता ही है इसके साथ सम्पूर्ण समाज भी नकारात्मक रूप से प्रभावित होता है। ऐसे सभी व्यक्ति धनोर्पाजन को साधन नहीं केवल साध्य मानने लगतें है। अब क्योंकि संपत्ति से प्राप्त भोगों की कोई सीमा नहीं होती वो लालसा असीमित होती है और इसी वजह से व्यक्ति के साथ साथ समाज के भी भ्र्ष्टाचारी और अकर्मण्य होने की आशंका लगातार बनी रहती है।[18]

पंडित दीनदयाल का कहना था के जिस समय हम सभी गरीब, पिछड़े और वंचित तबके को पक्के, सुंदर एवं स्वत्छ घर दे देंगे, इस समुदाय के बच्चो और स्त्रियों को शिक्षा रोजगार एवं जीवन दर्शन का ज्ञान दे देंगे, इस समुदाय की उद्योगों और धर्म की दीक्षा देकर आय को सम्मानित स्तर तक पहुँचा देंगे, उस दिन हमारा मातृभाव जागृत होगा। उन्होंने अंत्योदय के सिद्धांत में कहा कि आर्थिक असमानता की खाई को पाटना आवश्यक है और इस उद्देश्य को पूरा करने के लिए हम सभी को आर्थिक रूप से कमजोर और विपन्न समूहों के उत्थान के लिए प्रयासरत रहना चाहिए, क्योंकि धन सम्पत्ति का अभाव और प्रभाव दोनों समाज के लिए घातक है। भारतवर्ष की समस्त नीतियां, योजनाएं तथा आर्थिक कार्यक्रम कमजोर वर्ग और समूहों का जीवन स्तर सुधारने के लिए बननी चाहिए ताकि वो सभी राज्य और समाज की मुख्यधारा से जुड़ सकें और उन्हें समाज के अन्य वर्गों और समूहों के साथ बराबरी करने का अवसर मिल सके।[19]

निष्कर्ष

पंडित दीनदयाल के विचारों की व्याख्या करें तो निष्कर्ष रूप में ये कहा जा सकता है के उनके एकात्म मानववाद, अंत्योदय एवं चिति पर दिए विचारों से सेवाभावना जागृत होगी और देश का प्रत्येक व्यक्ति सेवाभाव से जुड़ेगा, जब सभी व्यक्तियों में इस भावना का प्रबल विकास होगा तब आर्थिक विकास की प्राप्ति होगी, सामाजिक चेतना का विकास होगा और राष्ट्र निर्माण का कार्य पूर्ण होगा और सभी व्यक्ति मोतियों की तरह राष्ट्र रुपी माला से एक साथ जुड़ेंगे, भले वो किसी भी धर्म, जाति, भाषा या क्षेत्र के हों, और सभी व्यक्ति प्रयासरत रहेंगे के इस राष्ट्र रुपी माला की कोई कड़ी कमजोर ना हो। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ इसी सेवाभावना के विचार को अपनाता है, राष्ट्र के लिए समर्पित रहता है और पिछले 100 से ज्यादा वर्षों से सेवाभावना के जरिए देश के समस्त नागरिकों को राष्ट्र रुपी माला में पिरोने का कार्य कर रहा है ताकि भारत हर क्षेत्र (सामाजिक–राजनीतिक–आर्थिक–रक्षा इत्यादि) में एक सशक्त राष्ट्र बन सके। आरएसएस के इस कार्य में विभिन्न दलों, मार्क्सवादी विचारकों एवं कुछ समुदायों के द्वारा स्वीकार नहीं किया जा रहा जो भारत को एक सशक्त राष्ट्र में ढालने का प्रयास में अवरोध पैदा करने का कार्य करते हैं। राष्ट्र रुपी माला से उसके अपने मोती ही अलग थलग रहने की कवायद में लगे हैं।

वहीं अगर वर्तमान में केंद्र सरकार की बात करें तो दीनदयाल जी के एकात्म मानववाद, अंत्योदय के सिद्धांतों से प्रेरित होकर कई योजनाएं शुरू करि हैं, जो अंतिम पायदान पर खड़े व्यक्ति को सीधे फायदा पहुँचा रहीं हैं। सबका साथ सबका विकास इस नारे में अंत्योदय और एकात्म मानववाद की झलक मिलती है। इसके अतिरिक्त प्रधानमंत्री आवास

योजना, उज्ज्वला योजना, प्रधानमंत्री जनधन योजना, प्रधानमंत्री बीमा सुरक्षा योजना, दीनदयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल विकास योजना, दीनदयाल उपाध्याय अंत्योदय योजना तथा स्किल इंडिया, स्टार्ट–अप एवं स्टैण्ड–अप योजना, दीनदयाल उपाध्याय ग्राम ज्योति योजना, प्रधानमंत्री मुद्रा योजना, आत्मनिर्भर भारत इत्यादि कई योजनाएं वर्तमान भारत सरकार ने शुरू करीं हैं। वर्तमान में पंडित दीनदयाल जी के सपनों का भारत साकार होता दिखाई दे रहा है जिससे एक मजबूत राष्ट्र का निर्माण सम्भव हो पाएगा।

पंडित दीनदयाल ने कहा था के 'एक सबल राष्ट्र ही विश्व को योगदान दे सकता है। उनका यही विचार आज के आत्मनिर्भर भारत की मूल अवधारणा है और इसी आदर्श को साथ लेकर वर्तमान मोदी सरकार देश को आत्मनिर्भरता के रास्ते पर आगे बढ़ा रही है। उदाहरण के लिए कोरोनाकाल में देश ने अंत्योदय की ही भावना के आधार पर अंतिम पायदान पर खड़े हर व्यक्ति की चिंता करि। इसी के साथ आत्मनिर्भरता की शक्ति से वर्तमान सरकार ने एकात्म मानववादी दर्शन को भी मूल रूप से लागू करने का प्रयास किया है। ये आत्मनिर्भरता ही थी जिस वजह से भारत ने लगभग पूरी दुनिया को दवाइयां और कोरोना वैक्सीन पहुंचाईं। जिस समय पंडित दीनदयाल ने आत्मनिर्भरता की बात करि थी उस समय भारत हथियारों, कृषि उपकरणों, तकनीकी क्षेत्र में, एवं कई अन्य क्षेत्रों में विदेशी सहायता पर निर्भर था। आजादी के बाद भारत ने जितने भी युद्ध चीन या पाकिस्तान से लड़े वो सभी युद्ध विदेशी शस्त्र और तकनीकी निर्भरता की वजह से ही लड़ पाए। पंडित दीनदयाल ने उस समय ये कहा था के इस समय ऐसा भारत बनाने की जरूरत है जो हर क्षेत्र में आत्मनिर्भर बने चाहे वो रक्षा क्षेत्र हो, कृषि हो, तकनीकी विकास हो या देश के संसाधनों का प्रयोग हो। आज का भारत वर्तमान सरकार के प्रयासों से रक्षा क्षेत्र में देश में निर्मित युद्धक विमान, तोप और मिसाइल इत्यादि बनाने में सक्षम बन चुका है। आज का भारत इंटरनेशनल सोलर अलायन्स का नेतृत्व कर रहा है और विश्व को इस क्षेत्र में राह दिखा रहा है। अभी आत्मनिर्भरता का प्रयोग नया है, इसके असली परिणाम कुछ वर्षों में दिखने लगेंगे और उस समय पंडित दीनदयाल के अंतिम पायदान पर खड़े व्यक्ति का विकास सम्भव होगा।

संदर्भ

1. Hariprasad N. "Deen Dayal Upadhyaya's Idea of Hindu Rashtra", Hindu Post. (July.16), 2021. Accessed Via: https://hindupost.in/politics/deen-dayal-upadhyayas-idea-of-hindu-rashtra/.Dated. 9/6/2021.
2. Ibid.
3. Ibid.
4. Anand Arun. "Demistyfying 'Integral Humanism: The Key Philosophy that Guides BJP and its Govts", The Print, 2021. Accessed Via: https://theprint.in/india/ demystifying-integral-humanism-the-key-philosophy-that-guides-bjp-and-its-govts/739516/. Dated, 12/6/2021.
5. Ibid.
6. सांबला, मनोज (2017) युगपुरुषः पंडित दीनदयाल उपाध्याय (दिल्लीः राज पब्लिकेशन्स),`मम `सेव, सिंह, दीनानाथ और हरनाम सिंह (2017) पंडित दीनदयाल उपाध्याय की चिंतन दृष्टि (नई दिल्लीः हिंदी बुक सेंटर).
7. पंडित दीनदयाल उपाध्याय (2014) एकात्म मानववाद, तत्व मीमांसा सिद्धांत विवेचन (दिल्लीः प्रभात प्रकाशन).`मम `सेव, महेश चंद्र शर्मा (2018) दीनदयाल उपाध्यायः कृतित्व एवं विचार (दिल्लीः प्रभात प्रकाशन).
8. Ibid, see also Anand, Arun (2021). Opp.Cite.
9. Ibid, see also Anand, Arun (2021). Opp.Cite.
10. Ibid, see also, Anand, Arun (2021). Opp. Cite.
11. Bhatt Chetan. Hindu Nationalism: Origins, Ideologies, and Modern Myths. (Oxford & New York: Berg), 2001.
12. पंडित दीनदयाल उपाध्याय (2014). Opp.Cite. see also, Anand, Arun (2021). Opp.Cite.
13. Ibid.
14. Ibid.
15. Ibid.
16. FE Online. "What is Antodaya-Deen Dayal Upadhyay's Concept and Guiding Principle of BJP", *Financial Express*, 2017. Accessed Via: https://www.financialexpress.com/india-news/what-is-antyodaya-deen-dayal-upadhyays-concept-and-guiding-principle-of-bjp/639659/. Dated. 16/7/2021.
17. झा, प्रभात (2020), ''अंतिम व्यक्ति तक का उदय चाहते थे पंडित दीनदयाल उपाध्याय'', Punjab Kesari (September 24). see also, कुमार, मनोज, ''अंतिम जन के हितचिंतक पं. दीनदयाल उपाध्याय'', *प्रवक्ता.कॉम.* Accessed Via: https://www.pravakta.com/antim-jan-ke-hitchintak-pandit-deendayal-upadhyay/.Dated. 18.6.2021.
18. Ibid.
19. Ibid.
20. Ibid.